Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, SEPT-OCT, 2021, VOL- 9/67
10.21922/srjis.v9i67.8237

स्वामी विवेकानन्द का विचार, दर्शन एवं आदर्श समाजः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

कविता कन्नौजिया, Ph. D.

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र - विभाग, किशोरीरमण महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,मथुरा।

Paper Received On: 21 OCT 2021

Peer Reviewed On: 31 OCT 2021

Published On: 1 NOV 2021

Abstract

भारत भूमि पर समय-समय पर अनेकानेक महान् पुरूषों ने जन्म लिया। उन्ही में सें एक स्वामी विवेकानन्द का नाम शीर्षस्थ है जिनके जीवनज्योति से जगतीतल जगमगा उठा है। जिन्होने भ्रमित युवाओं में चेतना को अवलोकित करके उन्हे साहस के साथ आगे बढ़ने, दीन-दुखियों में आशा का संचार भरने, एवं भारतीय धर्म, दर्शन तथा अध्यात्म को विश्वपटल पर पहुँचाने, निष्काम कर्म, सेवा, निष्ठा, को प्रेरित करने वाला आदर्श प्रस्तुत किया। स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन निश्चय ही अत्यन्त गौरवपूर्ण और प्रेरणादायक है। जिनके अमूल्य विचारों को अपनाकर एक उत्तम चरित्रयुक्त आदर्श समाज का निर्माण कर सकते है। मानव समाज का इतिहास एक आदर्श समाज बनाने के प्रयास का इतिहास रहा है। इस प्रयास में कितनी सभ्यताए जन्म ली, कितनी लुप्त हो गई। भारत में अनेक ऋषियों, मनिषियों ने वैदिक परम्परा को निरन्तर आगे बढ़ाया। वर्तमान युग में स्वामी विवेकानन्द इसी परम्परा के प्रतिनिधि है। इनके आदर्श समाज दर्शन में अध्यात्म के साथ व्यवाहारिकता दिखाई देती है स्वामी जी के आर्दश समाज की पहली शर्त- 'रोटी' है । धर्म से पेट नही भरता, हमें पहले भोजन देनी होगी। दूसरा तत्व- अध्यात्मिकता का है। क्योंकि धर्म भारत का आत्मा है। स्वामी जी ने स्पष्ट किया है कि धर्म और मजहब एक नही हैं। आर्दश समाज में धार्मिक संकीणता का कोई स्थान नही हैं। धर्म के परिवर्तन का कड़े शब्दों मे आलोचना करते है। तीसरा तत्व -एकता का है, बिना एकता के आदर्श समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। स्वामी जी ने ब्राम्हणों द्वारा बनाई गई जाति आधारित प्रथा को अमानवीय व शोषण कारी बताया है। जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी इसका उन्मूलन करना होगा। जाति भेद जब तक खत्म नहीं किया जायेगा। तब तक हिन्दू समाज में एकता नहीं आ सकता। आदर्श समाज में ''शक्ति, सम्पति, बुद्धि, अध्यात्मिक तथा जन्म सम्बन्धि विशेषाधिकार के लिये कोई स्थान नहीं हैं। अतः स्वामी जी का आदर्श समाज भारतीय संस्कृति (वासुदेव कुटुम्बकम) पर आधारित है। इनके विचार केन्द्र में मनुष्य साध्य है, जो समतामूलक, समावेशी समाज का निर्माण करते है। वर्तमान पीढ़ी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों में बदलाव आ रहा है। आज कि युवा पीढ़ी विकास एवं आर्थिक उन्नयन के बोझ तले इतनी अधिक दब गई है कि वह अपने पारम्परिक आधारभूत उच्च आदर्शों को छोड़ने में हिचकिचा भी नही रहा है। स्वामी विवेकानन्द ने एक बार आह्वान किया था-'उठो, और मंजिल तक पहुँचने से पहले मत रूकों' और हम सभी एक जुट हो, धैर्य और दृढ़ता से देश के लिए काम करे।'स्वामी विवेकानन्द की मानवमात्र, प्रकृतिक अधिकारों में आस्था थी उनका प्राकृतिक अधिकारों से तात्पर्य बाधाओं एव अवरोधों को दूर कर देने मात्र से नहीं था, यह हर एक को अपने शारीरिक मानसिक तथा अध्यात्मिक शक्ति के ऐसे निंवाद प्रयोग के अवसरों से सम्बन्धित है। जिससे किसी और की ऐसी ही स्वतन्त्रता पर आच नही आती हो। हर व्यक्ति को समान रूप से धर्म, शिक्षा व ज्ञान अर्जित करने का प्राकृतिक अधिकार होना चाहिए। स्वामी जी की यह अवधारणा थी की राष्ट्र व्यक्तियों के समूह का नाम है इसलिए हर व्यक्ति में मानव गरिमा तथा सम्मान की भावना जैसे गुणों का विकास करना चाहिए।

Keywords.*धर्म, दर्शन, आर्दश-समाज, राष्ट्र-निर्माण, चरित्र-निर्माण, राष्ट्र-प्रेम।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विवेकानन्द-एक ऐसे योजस्वी, युग प्रवर्तक, युवा सन्यासी थे, जिन्होंने भारत के गौरव को विश्व के समक्ष पुनर्स्थापित किया, शास्त्रीय ज्ञान को व्यावहारिक बनाने पर बल दिया, रूढ़ियों एवं परमपराओं की व्याख्या करते हुए धर्म और अध्यात्म के रहस्यों का खुलासा किया और उद्घोष किया कि- उठो जागों और श्रेष्ठ को प्राप्त करो। स्वामी जी मनुष्य के निर्माण में विश्वास रखते थे। जब भी वे देश भ्रमण पर निकले घोर गरीबी अज्ञानता और सामाजिक असमान्ताओं को देखकर दुखी हो जाते थे। वे चाहते थे कि देश अध्यात्म, त्याग और सेवा भाव से परिपूर्ण राष्ट्र बन जाय। विवेकानन्द जी प्रत्येक मानव को समान मानते थें और मानव में ईश्वर (नारायण) का वास मानते थें। वे मानते थे कि मानव की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। मनुष्य ही ईश्वर है। जो ईश्वर गरीबों अर्थात दरिद्र में वास करता है। एक भूखे व्यक्ति को तत्व ज्ञान देना अपमान करना हैं। पहाड़ों -पर्वतों, गुफाओं, वन-जंगलों के एकान्त के साधनों से अच्छा है, दरिद्र नारायाण की सेवा। ईश्वर की प्राप्ति हेतु उस ईश्वर की सेवा अधिक महत्वपूर्ण है,जो गरीबों अर्थात दरिद्र में वास करता है। इन्होंने स्त्री समानता स्वतन्त्रा और सशक्तिकरण को अधिक महत्व दिया। उनका मानना था कि स़्त्री सशक्त होगी तो समाज व परिवार के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगी। उनका का मानना था कि अवरोध, एकाकीपन, एकता का अभाव महिलाओं कि खराब हालात और आम लोगों के हितों कि अनदेखी ही भारत कि दूर्दशा की वजह बनी है। जहां स्त्रियां उदासीन और दुखी जीवन व्यतीत करती है, उस कुटुम्ब या देश की उन्नति की आशा नही की जा सकती। विवेकानन्द का सामाजिक दर्शन व्यवहारिक था। वे व्यक्ति-व्यक्ति के बीच किसी आधार पर भेदभाव का विरोध करते थे उनका मानना था की मानववाद जिसके अर्न्तगत व्यक्तियों की स्वतन्त्रता सामाजिक समानता तथा स्त्रियों के लिए न्याय व सम्मान के गुणों को अपनाया जाना चाहिए। ताकि भारत भी आधुनिक हो सके। विवेकानन्द जी समाज में प्रचलित ब्राम्हणवाद एवं विभिन्न कुरीतियों का विराध किया। जो आडम्बर एवं कर्मकाण्ड हिन्दू धर्म में प्रचलित थे। उनका मानना था कि धर्म भय कि बस्तु न होकर प्रेम आनन्द का सर्वोत्तम माध्यम है। जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संसार में एकत्व की अनुभूति ही धर्म है। समस्त ब्रम्हाण्ड एक अखण्ड वस्तु है। इस अखण्डता का बोघ करान ही धर्म का एक मात्र लक्ष्य है। धर्म मनुष्य को मुक्ति दिलाने का एक साधन है। सच्चे धर्म की साधना से मानव यह अनुभव करता है कि समग्र ही प्रकृति है, ईश्वर की उपाशना स्वरूप है ईश्वर के सम्बन्ध में सभी धर्मों की अवधारणा प्रायः एक सी है। धर्म मात्र सिद्धान्त नही है। धर्म व्यवहार की वस्तु है, अनुभव की वस्तु है, जो धर्म और दर्शन मनुष्य के दैनिक जीवन की समस्याओं का समाधान नही करता, जो धर्म मनुष्य की समान्य उलझनों को सुलझा नही सकता, वह धर्म और दर्शन आज के युग में समाज के लिए निरूपयोगी और व्यर्थ है। व्यवहार में परिणित हुए बिना शास्त्र ज्ञान निष्फल है। बड़े-बड़े सिद्धान्तों को सुनकर रखने से क्या होगा। प्रतिदिन उनकों व्यवहारिक जीवन में कार्यान्वित करना चाहिए। शास्त्रों की लम्बी-लम्बी वचनों को पढ़ने से क्या होगा? पहले उसे समझना चाहिए फिर अपने जीवन में परिणित करना होगा यही व्यवहारिक धर्म है। का समाधान नही करता श्रमिक कल्याण अर्थात उत्पादन करने वाले मजदूरों को भी अधिक महत्व देते थें। उनका मानना था कि श्रमिकों के द्वारा जो उत्पादन किया जाता है उसमें श्रमिकों का हिस्सा भी होना चाहिए, श्रमिक उत्पादन के वास्तविक हकदार होते है। उन्होंने देश के युवाओं को राष्ट्रवाद के प्रेरित किया। और कहा की राष्ट्र की सेवा तथा कल्याण युवाओं का नैतिक धर्म हैं। प्रत्येक मनुष्य को

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अपने राष्ट्र के प्रति नैतिक रूप से उत्तरदायी होना चाहिए। मातृदेवों भव, पुत्रदेवों भव, राष्ट्रदेवों भव, दरिद्रनारायण देवों भव, चाण्डाल देवों भव, मूर्खदेवों भव, –ये विवेकानन्द के शब्द थें। गरीब को सम्पन्न मूर्ख को बुद्धिमान और चाण्डाल को अपने जैसा बनाना ही भगवान की पूजा है। इससे राष्ट्र निर्माण और पुनरूत्थान होगा। भारत माता की पूजा करना चाहिये। भारत रहेगा तो देवी देवता भी रहेगे। भारत देव भूमि है। यहा देवता आते है। हर राष्ट्र की एक नियति होती हे। एक बुनियादी सिद्धान्त होता है। एक सन्देश होता है। एक मिशन होता है। जिसे हासिल करना होता है। हमें हमारी नस्ल का मिशन समझनाा होगा राष्ट्र मे हमारा क्या स्थान हो हमे समझना होगा और विभिन्न नस्लों के बीच सौहार्द बढ़ाने में अपनी भूमिका को जानना होगा। उन्होंने अपने अल्प जीवन भारतीय संस्कृति व धर्म के कलेवर में चेतना का संचार किया है। धर्म निरपेक्ष राष्ट्र और प्रगतिशील समाज की परिकल्पना की हैं।

आज की मशीनीकरण प्रतियोगितावादी दुनियाँ अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। वैज्ञानिक तकनिकी परिवर्तनों के कारण सामाजिक परिवेश में नित्य परिर्वतन हो रहा है। आज भौतिक रूप से सम्पन्न देश मानवीय मूल्यों से रहित होता जा रहा है। यह विश्व समुदाय के लिए एक अशुभ संकेत है। किसी भी समाज की प्रगति समाज के लोगों के सोच पर निर्भर करती हैं । आज भौतिक रूप से सम्पन्न देश मानवीय मूल्यों से दूर होता जा रहा है। आज समाज में जिस राजनैतिक विचारधारा का वर्चस्व है, वह समाज के एक हिस्से को दूसरे दर्जें का नागरिक मान रहा है, और प्रजातन्त्र का क्षरण हो रहा है। विवेकानन्द राष्ट्र को सौहार्द और शान्ति की ओर ले जाना चाहते थे। विवेकानन्द का राजनीतिक चिन्तन शक्ति और र्निभयता सिद्धान्त पर आधारित है। उनका मानना था कि शक्ति तथा र्निभयता के आभाव में व्यक्ति न तो व्यक्तिगत अस्त्वि की रक्षा कर सकता है और न अपने अधिकारों के लिए संघर्ष ही कर सकता है। विवेकानन्द के अनुसार 'शक्ति ही धर्म है, दुर्बलता पाप है, मृत्यु है।

स्वामी जी का मानना है कि शिक्षित व्यक्ति का पहचान आत्मविश्वास है। आत्मविश्वास से ही व्यक्ति किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है। आत्मविश्वास को मजबूत बनाने के लिए तन और मन को मजबूत बनाने वाली शिक्षा दी जानी चाहिए। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को महत्व देते हुए कहा है कि ''निर्बल व्यक्ति आत्मा का दर्शन नही कर सकता चाहे वह शारीरिक रूप से निर्बल हो या मानसिक रूप से। अस्वथ व्यक्ति जीवन के महान उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकता क्योकिं उसमें सहनशीलता आत्म-विश्वास आदि का अभाव होता हैं। सत्य ही आत्मा का स्वभाव है। सत्य, पवित्र और ज्ञान स्वरूप होता है। हृदय के अन्धकार को दूर करता है। युवाओं कों सत्यता का सहारा लेना चाहिए । जिससे वह शक्तिशाली ज्ञानी और पवित्र बन सके। खुद को शरीर नही आत्मा समझे वह आत्मा जो शक्तिशाली परमात्मा है। इसलिए कभी भी ऐसा न सोचे मैं, कमजोर, पापी या दुखी हूँ। आलसी भोगवादी और अधिक से अधिक आराम की इच्छा रखने वाले युवाओं को सचेत करते हुए कहा है कि-परिश्रम से दूर भागने वाले लोगों में चरित्र अनुशासन का अभाव दिखाई देता है इसलिए परिश्रमी बनों। खुद पर नियन्त्रण करना संयम होता है किसी भी क्षेत्र में शासन वही कर सकता है जो खुद अनुशासित है। संयम से सेवा की भावना, शान्ति, कर्मठता आदि गुण आते है तनाव मुक्त होने के लिए सयमी और अनुशासित बने। भाग्य पर भरोसा न करे बल्कि अपने कर्मो से भाग्य को स्वयं बनाए। उठों साहसी और शक्तिमान बनों कहकर उन्होने युवाओं को निर्भर बनने का सूत्र दिया । तथा नि'स्वार्थ भाव से

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सेवा को सबसे कर्म बताया।स्वामी जी ने युवाओं के लिए दृढ़ संकल्प और साहस पर जोर दिया है क्योंकि दृढ़ संकल्प से अच्छी आदते विकसित होती है। और दृढ़ चरित्र का निर्माण होता है। दृढ़ संकल्प महान पुरूषों की निशानी है।युवा शक्ति में वह ताकत है जो देश को समृद्धि के द्वार पर ला सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि उन्हे आत्मबोध कराया जाय की वे अपने जीवन के लक्ष्य बनाये। व्यक्गित विशेषताओं के साथ-साथ परिवार की सामाजिक आर्थिक सीमाओं एवं संसाधनों का ध्यान रखे।

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि भले ही भारत में भाषाई, जातिवाद एवं क्षेत्रीय विविधताए है लेकिन इन विविधताओं को भारत की सांस्कृतिक एकता एक सूत्र में पिरोए हुए है। अपने भाषणों मे धार्मिक चेतना को जगाने एवं दलित, शोषित व महिलाओं को शिक्षित कर उन्हें राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की बात कही है। उनका मानना था कि सदियों के शोषण के कारण गरीब जनता मानव होने तक का अहसास हो चुकी है। वे जन्म से ही अपने को गुलाम समझते है। इसी कारण इस वर्ग में विश्वास एवं गौरव जागृत करने की अति आवश्कता है। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि कमजोर व्यक्ति वह होता है जो स्वमं को कमजोर समझता है। और जो व्यक्ति स्वमं को सशक्त समझता है वह पूरे विश्व के लिए अजेय हो जाता है। स्वामीजी ने शिक्षा को समाज की ऋण मानते है। शिक्षा से व्यक्त्वि का निर्माण, जीवन जीने की दिशा एवं चरित्र, निर्माण होना चाहिए। जो शिक्षा मनुष्य में आत्म र्निभरता एवं आत्मविश्वास न जगाए उस शिक्षा का कोई औचित्य नही है। इस प्रकार विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सूचना प्रदान करना अथवा ज्ञान प्रदान करने तक ही सीमीत नही है अपितु सैद्धान्तिक रूप से सार्वभौमिक ज्ञान प्रदान करना है । उनके द्वारा ऐसे समाज बनाने की बात कही गयी है और उस समाज के लिए एक ऐसा नागरिक बनाने का विचार है जोखुद सोच सके, निर्णय ले सके, तथा कठिन से कठिन समस्याओं से संघर्ष कर सके। स्वामी जी कहते है' ज्ञान के प्राप्ति के लिए केवल एक ही मार्ग है मन की एकाग्रता,। एकाग्रता शिक्षा प्राप्त करने की सर्वश्रेठ विधि है। स्वामी जी कहते है कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि धार्मिक शिक्षा समाज का मेरूदण्ड है, धर्म ही शिक्षा का सार है। धर्म से शिक्षा को अलग कर दिया जा तो धर्म विहीन शिक्षा लोगों में पशुता का भाव उत्पन्न करती है, उसे मानवता की कोटि से अलग करती है, स्वामी जी बताया है कि 'धर्म व वस्तु जिससे पशु मनुष्य तक और मनुष्य परमात्मा तक उठ सकता है'। अर्थात धार्मिक शिक्षा द्वारा मनुष्य में मानवीय गुणों का विकास होता है। वह यह भी मानते है कि धर्म किसी मात्रा में वार्तालाप करने से नही बनता बल्कि धर्म का संबन्ध हृदय की अनुभूति से है।

स्वामी जी के शिक्षा का उद्देश्य-अंतर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना, दृढ़ चरित्र का निर्माण करना, नई रचनात्मक प्रवृति विकसित करना, मनः शक्ति का विकास करना, शारिरीक शक्ति का विकास करना, प्रेरणा शक्ति का विकास करना। राष्ट्र प्रेम की शिक्षा देना। विभिन्नता की खोज करना है। स्वामी विवेकानन्द का मानना है कि किसी देश कि योग्यता एवं क्षमता में वृद्धि उस देश के नागरिको के मध्य ब्याप्त है। शिक्षा के स्तर से हो सकती है। युवाओ के लिए ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है। जिसके माध्यम से आत्मोन्नति और चरित्र निर्माण मे सहायक हो सके। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें ज्ञान की प्राप्ति, आत्म निर्भर बनाने तथा चुनौतियों से निपटने मे सक्षम हो। स्वामी जी, ऐसी शिक्षा पद्धति के घोर विरोधी थे जिसमें गरीबों एव वचिंत वर्गो के लिए स्थान नही था। विवेकानन्द की अवधारणा लोगों को

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जोडने के लिए अत्यन्त उपयोगी है क्योकि यह अवधारणा भारतीय संस्कृति के प्राण तत्व सर्वधर्म संभाव पर जोर देती है। यदि सर्व धर्म संम्भाव का अनुकरण करे तो विश्व की अधिकांश समस्याओं को रोका जा सकता है। यदि विवेकानन्द की दरिद्रनारायण की संकल्पना को साकार किया जाय तो असमानता गरीबी, गैर बराबरी अस्पृश्यता के समस्याओं से निपटा जा सकता है। एक आदर्श समाज की सकल्पना को साकार किया जा सकता है।

स्वामी जी के शब्दों में –''मानव जीवन के दो उद्देश्य है। विज्ञान और आनन्द की प्राप्ति''। इस तथ्य का विश्लेषण करने से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मानव जीवन के दो पहलू है। पहला-सांसारिक सम्पंन्नता और दुसरा-परमान्द (मोक्ष) की प्राप्ति आज आवश्यकता है-अध्यात्मयुक्त पाश्चात्य विज्ञान की तथा व्यक्ति की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना। स्वामी जी ने अपने धर्म विज्ञान में लिखा हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर जो मौलिक सत्ता विद्यमान है। उसको जागृत करना है। शिक्षा के अभाव में दया प्रेम कम होती है। राक्षसी प्रवृति बढ़ती जाती है। शिक्षा से शारीरिक, बौद्धिक, भवनात्मक, नैतिक और अध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है । स्वामी जी कहते कि मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य विज्ञान व आनन्द की प्राप्ति करना है। स्वामी विवेकानन्द का विचार व कार्य पूरे विश्व को एक नई दिशा दी। नैतिक धार्मिक एवं अध्यात्मिक जीवन मुल्यो से प्रेरित युवा शक्ति के लिए प्रेरणा के स्रोत है। उन्होने अपने भाषण के द्वारा युवा शक्ति का आह्वान किया, युवाओं के हृदय मे सोए हुए अदम्य साहस और उत्साह जाग्रत करने का काम किया। स्वामी जी का मानना था कि युवाओं को उनके अन्तर्निहित शक्तियों से परिचित कराकर ही किसी समाज,राष्ट्र को सशक्त बनाया जा सकता है। समाज में उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरो पर खड़ा हो सकता हैं। भारत में गुरू शिष्य का सम्बन्ध पिता पुत्र का संबन्ध है, गुरू का स्थान पिता से भी बढ़कर है हमारे देश में गुरू शिष्य परम्परा का भारी ह्रास हुआ है। वेतनधारी शिक्षकों की जमात खड़ी हो गई है जो वेतन वृद्धि के लिए आन्दोलन करते रहते है। आज के गुरूओं से आशा की जाती है कि वह अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठावान बने। विद्यार्थी में बौद्धिक संस्कारों के साथ-साथ नैतिक संस्कारों को विकसित करे। स्वामी विवेकानन्द की नस-नस में भारतीयता तथा अध्यात्मिकता कूट-कूट कर भरी हुई क्थी उनकी शिक्षा दर्शन का आधार वेदान्त या उपनिषद् ही रहे है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव का नौ निर्माण करना क्योंकि व्यक्ति के सर्वांगीण उत्थान से समाज का सर्वांगीण उत्थान होता है। इनके अनुसार वेदान्त दर्शन में प्रत्येक बालक में असीम् ज्ञान और विकास की सम्भावना है। स्वामी जी के शब्दों में 'मनुष्य में अन्तर्निहीत पूर्णता को व्यक्त करना ही शिक्षा है।

२१वीं शताब्दी के बदलते परवेश में सूचना और प्रौद्यौगिकी केयुग में स्वामी जी को चिन्तन को अपनाने की आवश्कता है। स्वामी जी का मानना है कि जिन विद्यार्थियों को अपने संस्कृति का ज्ञान नहीं उन्हें जीवन के वास्तविक मूल्यों का पाठ नहीं पढ़ाया जा सकता। आज भारत का पिछड़ेपन का प्रमुख कारण शिक्षा पद्धति उत्तरदायी है। वर्तमान शिक्षा पद्धति न तो उत्तम जीवन जिने की तकनीक प्रदान करती है। और न ही बुद्धि का नैसर्गिक विकास करने में सक्षम है। उन्होंने बताया कि अध्यात्मिक तथा भौतिक जगत एक ही है अतः शिक्षा ऐसी हो जो बालक को विभिन्नता में एकता की अनुभूति करना सिखाए। उसमें आज्ञापालन, समाज सेवा एवं महापुरूषों एवं सन्तों के अनुकरणीय आदर्शों को

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अपनाने की क्षमता विकसित हो जाए। स्वामी जी ने तत्कालिन भारतीय समुदाय कि आर्थिक दृष्टि से हीन दशा को सुधारने के लिए जनसाधारण पर बल दिया।हमारे राष्ट्र की आत्मा झुग्गि में निवास करती है शिक्षा रूपी दीपक को घर-घर ले जाना होगा। शिक्षा मन्दिर के द्वार सभी व्यक्तियों के लिए खोल दिए जाय। और कहा- मैं जन साधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप समझता हूँ जब तक भारत की सामान्य जनता को उप्युक्त शिक्षा अच्छा भोजन तथा अच्छी सुरक्षा नहीं प्रदान की जाएगी। तब तक प्रत्येक राजनीति बेकार सिद्ध होगी।

नवचेतना का संचार करने वाले युगदृष्टा स्वामी विवेकानन्द का जीवन-दर्शन तात्कालिन परिस्थितियों में बहुमूल्य उपयोगी एवं समस्याओं के निराकरण में मार्गदर्शक की भूमिका में प्रतीत हो सकते हैं। नैतिक, धार्मिक, अध्यात्मिक विचारो से प्रेरित स्वतंत्रता,समानता एवं बंधुत्व की भावना से युक्त जीवन मूल्यों में दृढ़ विश्वास रखने वाले महान, तेजस्वी, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी आज के युवाओं के चरित्र-निर्माण, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का विकास करने, तन व मन से शक्तिशाली बनाने, निर्भिक व अनुशासित बनाने, धैर्य व संयम का पाठ पढ़ाने तथा निःस्वार्थ भाव से मानव सेवा करने के लिए प्रेरित करता है। स्वामी विवेकानन्द के विचार में आदर्श, मर्यादा, पराक्रम, ईमानदारी तथा उच्च मानवीय मूल्यों के बिना किसी का जीवन महान नहीं हो सकता।ज्ञानी व्यक्ति कभी किसी की स्वतत्रता समानता सम्मान को भंग नही कर सकता। स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि सत्य अहिंसा और ईमानदारी जैसे मूल्यों की आवश्यकता हैं इन्हें तभी प्राप्त किया जा सकता है जब हम अपनी संस्कृति परम्पराओं एवं आदशों के अनुसार व्यवहार करेंगे। मानवतावादी राष्ट्रवादी चिंतक एक नए समाज की कल्पना की है जिसमें धर्म जाति के आधार पर कोई भेद न हो।स्वामी जी यह मानते थे कि सभी धर्मों के प्रतीक भले अलग - अलग है परन्तु उनका सार एक है नैतिक मूल्य एक से है।

स्वामी विवेकानन्द जी का विचार दर्शन, और शिक्षा अत्यन्त उच्चकोटि में है वे समाजवादी, मानवता के सच्चे प्रतिक थे और है। उन्होंने अपने संस्कृति को जीवित रखने हेतु भारतीय संस्कृति के मूल अस्त्वि को बनाये रखने का आह्वान किया ताकि आने वाली पीढ़ी संस्कारिक, नैतिक गुणों से युक्त, न्यायप्रीय, सत्यधर्मी और अध्यात्मिक तथा भारतीय आदर्श के सच्चे रूप मे विश्व में अपना वर्चश्व तथा भारत को विश्व गुरू का स्थान दिलाए। आज हमारे देश भारत सहित समस्त विश्व में बढ़ति अराजकता, हिंसा, उन्माद आतंकवाद नसाखोरी तथा पर्यावरण क्षरण आदि समस्याओं के कारण समस्त मानव जाति को अपनी सभ्यता और संस्कृति के समक्ष अस्त्वि का संकट दिखाई दे रहा है। मानव ने अपने सांस्कृतिक मूल्यों की अवहेलना की है। उसके कारण आज हमे अपनी सभ्यता और संस्कृति के पुनर मूल्याकंन की आवश्कता प्रतीत हो रही है। इसलिए विवेकानन्द जी अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में भारतीय दृष्टि कोण और सामाजिक आदर्शों के अनुसार गीता, उपनिषद् और वेद में निहीत नैतिक और अध्यात्मिक मूल्यों के समावेश की आवश्यकता पर बल दिया। स्वामी विवेकानन्द जैसे चिन्तक के सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्दश वर्तमान समाज को दिशा बोध कराने में सक्षम होगे। अर्थात उनके विचार, दर्शन, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी अत्यन्त प्रासंगिक एवं उपयोगी है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संन्दर्भ ग्रन्थः-

डॉ० विनोद कुमार गुप्ता स्वामी विवेकानन्द और उनका अवदान, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली २०१२ पृष्ठ २१५।
डॉ० सरोज सक्सेना, शिक्षा के दार्शनिक एव समाजशास्त्रीय आधार, साहित्य प्रकाशन, आगरा, २०१४, पृष्ठ ३७८।
कुमार भवेश, स्वामी विवेकानन्द की चिन्तन की प्रासंगितका भारतीय आधुनिक शिक्षा २०१० अंक३ पृष्ठ ४६, ४८।
सक्सेना एन° आर° स्वरूप, शिक्षा दर्शन एवं पाश्चत्य तथा भारतीय शिक्षाशास्त्री, आर° लाल बुक डिपो मेरठ, २००६, पृष्ट ३४४।
विवेकानन्द साहित्य खण्ड -२ पृष्ठ ३२१।
विवेकानन्द साहित्य, खण्ड-पाँच पृष्ठ१३८,१३६।
विवेनन्द साहित्य, खण्ड-६ पृष्ठ ५७०,५७३, कलकत्ता।
स्वामीविवेकानन्दः भारतीय नारी , श्रीरामकृष्ण आश्रम धनतोली नागपुर, १६७८पृष्ठ -५४।
स्वमीविवेकानन्द : शिक्षा , श्रीरामकृष्ण आश्रम धनतोली नागपुर ,१६७५ पृष्ठ १४।
स्वामीविवेकानन्द ,जाति संस्कृति समाजवाद , प्रथम संस्करण २००५।
Yuvaon ke adarsh swami vevikanand,safal aur charitrvan babane ka rajamarg,1019 pages 16-130.
१२-शर्मा, आर०, शिक्षाके दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार, आरलाल० बुक डिपों , मेरठ,२०११,पृष्ठ ५५१।
१३-तिवारी, विनोद, स्वामी विवेकानन्द मनोज पब्लिकेशन, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली, तेराहंवा संस्करण, २०१४ पृष्ठ-५२-८७।
१४-प्रो० रमन बिहारीलाल एवं श्रीमती सुनीता पलौड़, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आर०लाल बुक डिपों, मेरठ,२०१०, पृष्ठ-२८६।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies